Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4
ISSN No: 3049 4176

वैदिक पर्यावरण-दृष्टि

डॉ सुरेश कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत), भगवान परशुराम महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

सारांश:

भारतीय समाज एवं संस्कृति के निर्माण तथा उसके आदर्श प्रतिमानों के निर्धारण में वेदों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वे भारतीय ज्ञान-परम्परा के प्रमुख स्रोत हैं, जिनमें मानव और प्रकृति के संतुलित सह-अस्तित्व की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वैदिक साहित्य में वायु, जल, वन, नदियों, पृथ्वी तथा समस्त जीव-जगत् के संरक्षण को महत्त्व प्रदान किया गया है। वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण विश्वव्यापी चिंता का विषय बन चुका है।[1] वैश्विक तापवृद्धि, वायु एवं जल-प्रदूषण, ओजोन परत का क्षय तथा जैव-विविधता की हानि जैसी समस्याएँ मानव जीवन और प्रकृति के लिए गंभीर चुनौती हैं। वर्ष 1972 में स्टॉकहोम में आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन ने वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय चेतना को सुदृढ़ किया। भारत ने भी 1986 में पर्यावरण संरक्षण अधिनियम लागू किया।[2] अतः वर्तमान पर्यावरणीय संकट के समाधान तथा प्रकृति-संरक्षण की चेतना विकसित करने में वैदिक पर्यावरण-दृष्टि अत्यंत प्रासंगिक एवं उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

मुख्य शब्द: वेद , पर्यावरण, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, प्रकृति संरक्षण

वर्तमान युग में मानव पर्यावरण प्रदूषण के जिस संकट या कठिनाई का सामना कर रहा है। हमारे वैदिक ऋषियों ने हजारों साल पहले ही इस पर्यावरणीय प्रदूषण के निवारणार्थ मनुष्य- समाज का मार्गदर्शन किया था। जैविक और अजैविक अवस्थाओं के मध्य पूरा संतुलन स्थापित करके ही पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है।इस संतुलन का संकेत वेदों में स्पष्ट रूप से किया गया है। शिवमय कामनाशक्ति,विशुद्ध या अमिश्र चरित, निर्दोष वचन और सुनियत वेग क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की मुख्य विशिष्टताएँ मानी जाती हैं और पर्यावरण संरक्षण भी मुख्यतः इन्हीं विशिष्टताओं पर वशवर्ती है।

वेदों में जल,पृथ्वी, वायु, अग्नि, वनस्पति, आकाश आदि के प्रति असीमित निष्ठा उदित करने पर अत्यन्त जोर दिया गया है। वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण के प्रति मनुष्य को सजग ही नहीं किया, अपितु उसके संरक्षण के लिए प्रोत्साहित भी किया गया। पर्यावरण संरक्षण के हेतु धार्मिक आस्था से जोड़कर अनवरत संरक्षण एवं संवृद्धि का पथ अभिवन्दनीय है।तत्ववेत्ता ऋषियों के निर्देशों के अनुसार व्यतीत करने पर पर्यावरण- असन्तुलन की समस्या ही उत्पन्न नहीं हो सकती है। पर्यावरण में हुए अवांछनीय अपवर्तनों के कारण प्रदूषण जैसी समस्याएँ सर्वत्र व्याप्त हैं। मनुष्य उपभोगवाद के मनोभाव से इस कलिकाल में पर्यावरणीय तत्वों की घोर अवहेलना कर रहा है। मोहन जाल में समावृत्त मनुष्यों को इस बात का ज्ञान नहीं है। और यह निश्चय है कि जैसे अग्नि में ईंधन और घी डालने से अग्नि बढ़ती ही जाती है, उसी प्रकार कामों के उपभोग से काम शान्त नहीं होता, किन्तु बढ़ता ही जाता है। इसलिए मनुष्यों को कभी भी विषयासक्त नहीं होना चाहिए।

वर्तमान स्थिति तो यही है कि सर्वविध पर्यावरण-प्रदूषण विविध समस्याओं का हेतु बन रहा है। प्राकृतिक पर्यावरण के प्रदूषण तथा क्षरण के फलस्वरुप सकल चेतन जग या विश्व विभिन्न व्याधियों से ग्रस्त हो रहा है। मानवमात्र को शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के रोग अपने नियंत्रण में ले रहे हैं। प्राकृतिक असन्तुलन की स्थिति नित नई प्राकृतिक आपदाओं का कारण बन रही है आत्मिक पर्यावरण के प्रदूषित होने से मनुष्य आध्यात्मिक चिन्तन से भी दूर होता चला जा रहा है। वह काम, क्रोध ,मद,लोभ, राग व द्वेष के वशीभूत होता जा रहा है। इससे मनुष्य का आचरण भी प्रभावित हुआ है। आज का मनुष्य कर्तव्य पर कम अधिकार पर अधिक जोर दे रहा है। इस प्रवृत्ति ने मानवाधिकार- हनन की जटिल समस्याओं को जन्म दिया है। वेदों में पञ्चतत्व [पृथ्वी, जल, तेज (अग्नि), वायु, आकाश] को प्रदूषण से विमुक्त करने के लिए अनेक प्रकार से उपासना करके इनके संरक्षण के लिए मानव को प्रोत्साहित किया है।

पृथ्वी तत्वः

अथर्ववेद संहिता में पृथ्वी को माता कहकर पुकारा है तथा मनुष्य को उसका पुत्र कहा है।

यत् ते मध्यं पृथिवी यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः।

तासु नो धेह्यभि नः पवस्व माता भूमिः पुत्रों अहं पृथिव्याः।[3]

अर्थात् पुत्र जैसे अपने माता-पिता की रक्षा यत्नपूर्वक करता है उसी प्रकार धरती रूपी माता की भी रक्षा मनुष्य को यत्नपूर्वक करने चाहिए। अथर्ववेद में पुनः इसके दोहन न करने के लिए संकेत देता हैं आज का मानव हर परिस्थिति में लाभ पाना जाता है। वह चाहता है कि धरती का अधिक से अधिक दोहन कर लिया जाये इसके भीतर या बाहर जो कुछ भी अमूल्य वस्तुएँ हैं। उन सबको धरती से छीन लिया जाए। परन्तु अथर्ववेद की ऋचाएँ पृथ्वी के दोहन के लिए निषेध करती हैं।

शिला भूमिरश्मा पांसुः सा भूमिः संधृता धृता।

तस्मै हिरण्य वक्षसे पृथिव्या आकरं नमः।[4]

शिला,भूमि,धूल और पत्थर इनके रूपों को पृथ्वी धारण करती है। भलीप्रकार सुवर्ण की खान को अपने वक्षः स्थल में धारण करने वाली पृथ्वी को मैं प्रणाम करता हूँ। यजुर्वेद में कहा गया है कि पृथ्वी की दृढ़ता को दृढ़ करो तथा इसकी हिंसा न करो-

"पृथिवीं दृढ़ पृथिवी मां हिंसी:"[5]

वृक्षों के काटे जाने से पृथ्वी की दृढ़ता में कमी आ जाती है। वृक्षों के काटे जाने पर भी वेदों में निषेध किया है चूँकि वृक्ष भी पर्यावरण संरक्षण की भूमिका निभाते हैं यहाँ तक कि वृक्षों की रक्षा के लिए वृक्षों को हमारी आस्था और संस्कृति से जोड़कर उनमें देवत्व का भान करवाया। वन के कल्याणकारी होने का उल्लेख अथर्ववेद में प्राप्त होता है-

"अरण्यं ते पृथिवी स्योनमस्तु"[6]

वर्तमान समय में वृक्षों की निर्ममतापूर्ण कटाई से वातावरण में CO_2 की मात्रा में अतिशय वृद्धि हो रही है, जिसके कारण तापमान बढ़ता जा रहा है जो कि पर्यावरण के लिए संकट का सूचक है।

जल तत्व:

चराचर प्राणियों के लिए जल का महत्व सर्वविदित हैं।आज नानाविध कारणों से जल स्रोत प्रदूषित हो रहे हैं। प्रदूषण जल जहाँ अनेक रोग जैसे-कफ, वात व पित्त की स्थिति का हेतु है वही शुद्ध जल उन रोगों के समान का सशक्त माध्यम है। जल की सुरक्षा एवं जल के संरक्षण से ही हमें स्वच्छ जल मिल सकता है इसलिए अथर्ववेद में कहा है-

इमा आप: प्र भराम्ययक्ष्मा यक्ष्मनाशनी:।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4
ISSN No: 3049 4176

गृहानुप प्र सीदाम्यमृतेन सहाग्निना।।[7]

जल की उपयोगिता को स्वीकार करते हुए ऋग्वेद में कहा है-

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्यते।

देवा भव्य वाजिनः।।[8]

अर्थात् जल के भीतर अमृत और औषधि है। हे ऋषिगण उस जल की प्रशंसा के लिए उत्साही बनिए। इसी क्रम में वैदिक ऋषि आगे कहते हैं-

अप्सु मे होमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेजा।

अग्निं च विश्वशम्भुवमापश्च विश्व भेषजीः।।[9]

हे जल! मेरे शरीर के लिए रोगनाशक औषध पुष्ट करो, जिससे मैं बहुत दिनों तक सूर्य को देख सकूँ। यजुर्वेद में कहा है -कि जल देवता है, महान है और विश्व का कल्याणकारी है।

"आपो हि सर्वस्व जगतः प्रतिष्ठा"[10]

जल ही सम्पूर्ण जगत की प्रतिष्ठा है।

अग्नि तत्वः

वेदों में पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त कराने के लिए पर्यावरण घटक अग्नि तत्व की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। जिस प्रकार से हमारा शरीर तेज तत्व के बिना सार हीन है उसी प्रकार बाह्य जगत भी अग्नि तत्व के बिना उदासीन है। अग्नि तत्व का पर्यावरण के शोधन में विशेष योगदान है। वैदिक ऋषियों ने अग्नि तत्व को माध्यम बनाकर यज्ञ की विधाओं द्वारा पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए मानव को वेद के माध्यम से सचेत किया है। अग्नि में व्याप्त रोगाणुओं और विषाणुओं को दूर करती है।

शुचिः पावको अद्भुतो मन्रा यज्ञों मिमिक्षति।

नराशंसस्त्रिरा दिवो दिवो देवेषु यज्ञियः।।[11]

अग्नि तत्व के वैशिष्ट्य को स्थापित करते हुए इसे पावक और शुचि कहा है।

यजुर्वेद में अग्नि को जीवन को पवित्र करने वाला कहा है इस संसार का अमर दूध कहा जाता है यह समस्त वातावरण के शोषण कीटाणुओं को नष्ट करता है।[12]

अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यासद्विश्वं न्यत्रिणम्।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049 4176

अग्निर्नो वनते रयिम्।।[13]

अर्थात् अग्नि तिक्ष्ण तेज के द्वारा भोजन कर्ता राक्षसों के संहार कर्ता और हम लोगों की धन प्रदाता हैं। वस्तुत: अग्नि दूषित तत्वों को नष्ट करती है एवं प्राकृतिक तत्वों की रक्षक है और प्रकाशक है अर्थात् अग्नि में कोई वस्तु न फेकें और न जलाएँ, जिससे पर्यावरण प्रभावित हो।

वायु तत्वः

वायु का पर्यावरण तथा हमारे जीवन में गहरा संबंध है क्योंकि वायु द्वारा ही साँस लेने की क्रिया संभव होती है ऋग्वेद में कहा है-

"मह्यं वातः पवताम्"[14]

अर्थात् मुझे वायु पवित्र करे। वेदों में वायु की स्तुति की गई है, वायु से ही हम श्वास लेते है अतः वायुमण्डल की आवश्यक गैसों की मात्रा में सन्तुलन जरूरी है पादप एवं जीव-जन्तु दोनों ही पर्यावरण संतुलन के प्रमुख घटक हैं। इसलिए दोनों को ही संतुलित अनुपात में रहना अनिवार्य है। ऋग्वेद के दशममण्डल में वायुतत्व को प्रतिपादित करता हुआ यह मंत्र उल्लेखनीय है-

वात आ वायु भेषजं शम्भु मयोभु नो हदे।
प्र ण आयूंषि तारिषत।[15]

औषध के समान होकर वायु हमारे हृदय के लिए आवें। वह कल्याणकर और सुखकर हो व वायु का विस्तार करे।

उत वात पितासि न उत भ्रातोत न: सखा
स नो जीवातवे कृधि।[16]

वायु! तुम हमारे पिता, भ्राता और बन्धु हो। तुम हमारे जीवन के लिए औषधि बनो।

इस प्रकार वैदिक ऋषि प्रार्थना करते हैं कि पाप-ताप सुनने होकर वायु बारे इससे प्रतीत होता है कि ऋषिगण प्रदूषण रहित वायु के संरक्षण के पक्षधर थे।

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रप:।
त्वं हि विश्व भेषजो देवानां दूतं ईयसे।[17]

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049 4176

वायु तुम इस और बेहतर औषधि ले आओ और जो अहितकर है, उसे यहाँ से ले जाओ। तुम संसार के औषध रूप हो। तुम देवदूत होकर जाते हो। वायु मानव जीवन के लिए प्रकृति द्वारा प्रदत्त अमूल्य औषधि के समान है। वैदिक साहित्य में वायु को जीवनदायिनी शक्ति मानते हुए उसकी शुद्धता और पवित्रता पर विशेष बल दिया गया है। वायु के बिना जीव-जगत् की कल्पना संभव नहीं है। वर्तमान समय में बढ़ता हुआ वायु-प्रदूषण, औद्योगीकरण, शहरीकरण, वाहनों से निकलने वाला धुआँ तथा वनों की निरंतर कटाई वायुमण्डल की शुद्धता को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहे हैं। परिणामस्वरूप मनुष्य के स्वास्थ्य के साथ-साथ समस्त जीव-जगत् पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

वर्तमान महानगरों में वायु की गुणवत्ता लगातार चिंता का विषय बन रही है। धूल-कण, धुआँ तथा विभिन्न हानिकारक गैसें वायुमण्डल में मिलकर उसे प्रदूषित करती हैं। इसके कारण श्वसन संबंधी समस्याएँ, एलर्जी तथा अन्य स्वास्थ्यगत कठिनाइयाँ बढ़ रही हैं। इसलिए आज वैदिक काल की 'शुद्ध वायु' की संकल्पना पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक प्रतीत होती है। वेदों में वायु को केवल भौतिक तत्व न मानकर जीवन एवं स्वास्थ्य का आधार माना गया है। वायु के प्रति सम्मान और उसके संरक्षण की भावना हमें यह संदेश देती है कि प्रकृति का शोषण नहीं, बल्कि उसका संरक्षण मानव का नैतिक दायित्व है। आज आवश्यकता है कि हम अधिकाधिक वृक्षारोपण करें, वनों की रक्षा करें, प्रदूषणकारी गतिविधियों को नियंत्रित करें तथा स्वच्छ ऊर्जा के साधनों को अपनाएँ। इस प्रकार वैदिक पर्यावरण-दृष्टि और आधुनिक पर्यावरण-चेतना के बीच स्पष्ट सामंजस्य दिखाई देता है। स्वच्छ वायु स्वस्थ जीवन की आधारशिला है, अतः वर्तमान पीढ़ी को वायु की शुद्धता बनाए रखने के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों के लिए भी स्वच्छ एवं संतुलित पर्यावरण सुनिश्चित करने का संकल्प लेना चाहिए। इसमें सबसे महत्वपूर्ण ऑक्सीजन गैस है। वायुमण्डल में जब ऑक्सीजन की कमी होती है तभी वायुमण्डल प्रदूषित होता है इसलिए वेद में शुद्ध वायु को भी देवता कहकर प्रणाम किया गया है कि आप शुद्ध रूप से प्रवाहित होकर हमारा कल्याण करें।

आकाश तत्व: पर्यावरण संरक्षण में आकाश की भूमिका भी सराहनीय है। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए आकाश में व्याप्त ओजोन परत की रक्षा होना परम आवश्यक है। तथा आकाश में व्याप्त गैसों के अनुपात में सन्तुलन भी आवश्यक है इनके असन्तुलन से पर्यावरण प्रदूषित होने लगता है।

आधुनिक समय में भूमण्डल पर वाहनों उद्योगों से निकलने वाली असहनीय ध्वनि सम्पूर्ण आकाश में व्याप्त होकर आकाश में असन्तुलन पैदा करती है। जिसे ध्वनि प्रदूषण कहा जा सकता है। प्राचीन वैदिक ऋषि ध्वनि प्रदूषण के लिए भी सजक थे। मंत्र दृष्ट ऋषियों ने ऋग्वेद में शुद्ध वाणी की कामना की है-

"भद्रं कर्णेभि: श्रृणुयाम देवा"[18]

उपरोक्त मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि हे प्रभु !हम शुभ सुने, सर्वत्र सुख देखें, मधुर बोले।

इयं या परमेष्ठिनी वाग् देवी ब्रह्मसंशिता।

ययैव ससृजे घोरं तयैव शान्तिरस्तु न:।[19]

परमपद पर विराजमान, तेजस्वी ज्ञान से देदीप्यमान जो वाणी की देवी सरस्वती है, वे हमारे द्वारा दूसरों के प्रति बोले गये अपशब्दों के दोष से हमें मुक्त करें तथा हमारे लिए शान्ति प्रदान करने वाली सिद्ध हो। उपर्युक्त मन्त्र से यह प्रेरणा प्राप्त होती है कि पर्यावरण-संरक्षण केवल प्राचीन काल की आवश्यकता नहीं, बल्कि वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी अत्यन्त प्रासंगिक विषय है। आज ध्वनि से आकाशीय प्रदूषण निरन्तर बढ़ रहा है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, वाहनों की बढ़ती संख्या, वृक्षों की कटाई तथा प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित दोहन के कारण पर्यावरणीय असन्तुलन उत्पन्न हो रहा है। विशेषतः अत्यधिक ध्वनि, अनावश्यक शोर तथा विभिन्न प्रकार के यान्त्रिक उपकरणों से उत्पन्न ध्वनि-प्रदूषण मानव-स्वास्थ्य एवं प्राकृतिक जीवन दोनों को प्रभावित कर रहा है।

वैदिक ऋषियों ने इन समस्याओं की सम्भावना को समझते हुए प्रकृति के प्रत्येक घटक के प्रति सम्मान और संरक्षण की भावना विकसित की थी। आकाश को देवतुल्य मानना तथा अन्तरिक्ष में विद्यमान सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र एवं ग्रहों को प्रकृति-व्यवस्था के महत्त्वपूर्ण अंग के रूप में स्वीकार करना वैदिक पर्यावरण-दृष्टि की व्यापकता को दर्शाता है। वैदिक चिन्तन में प्रकृति को केवल मनुष्य के उपभोग की वस्तु न मानकर जीवन का आधार माना गया है।

वर्तमान समय में जब जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापवृद्धि, वायु-प्रदूषण, जल-संकट, वन-विनाश तथा जैव-विविधता के ह्रास जैसी समस्याएँ सम्पूर्ण विश्व के समक्ष चुनौती बनी हुई हैं, तब वैदिक पर्यावरण-दृष्टि विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध हो सकती है। वैदिक शान्ति-पाठ में प्रकृति के विभिन्न तत्त्वों के लिए शान्ति की कामना की गई है, जो मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व का संदेश देता है।

अतः वैदिक साहित्य में निहित पर्यावरणीय चेतना को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ समन्वित करके सतत् विकास, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित एवं संतुलित पर्यावरण का निर्माण किया जा सकता है। यही वैदिक पर्यावरण-दृष्टि की आधुनिक युग में वास्तविक उपादेयता है।

वैदिक शान्ति पाठ में पर्यावरण को सुरक्षित कर सुखमय और शान्तिमय जीवन जीने की बात कही गई है।

पृथिवी शान्तिअन्तरिक्षं शान्तिर्द्यौः शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्तिर्वनस्पतय: शान्ति विश्वे मे देवा: शान्ति सर्वे मे देवा: शान्ति: शान्ति: शान्ति: शान्तिभि:। ताभि: शान्तिभि: सर्वशान्तिभि: शमयामोऽहं यदिह घोरं यदिह क्रूरं यदिह पापं तच्छान्तं तच्छिवं सर्वमेव   शमस्तु न:।[20]

पृथ्वी, अन्तरिक्ष, द्युलोक, जल, औषधियाँ, वनस्पतियाँ और समस्त देव हमारे लिए शान्तिप्रद हो। शान्ति से बढ़कर असीम शान्ति को हम प्राप्त करें। इन सभी प्रकार की शान्ति - प्रक्रियाओं द्वारा हम घोर कर्म, क्रूर-कर्मफल और पापपूर्ण फल को दूर हटाते हैं, वे शान्त होकर कल्याण प्रद हों। वे सभी हमारे लिए मंगलप्रद हो।

निष्कर्ष:

समस्त तथ्यों को जानने के बाद हम यह बोल सकते हैं कि पर्यावरण को प्रदूषण से विमुक्त करने के लिए हमें एक बार पुनः वेदों की अभिसरण में जाना होगा। वेद तक पुनः लौटना होगा। आधुनिकीकरण के इस युग में मानव अपने विद्यामानता को भूल चुका है मानव की विद्यामानता वेदों से है वेद ही हमारें आदि ग्रन्थ है तथा पर्यावरण संरक्षण की बात वेदों ने ही हमारे अभिमुख सर्वप्रथम रखी है। उपर्युक्त समस्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि वेदों में पर्यावरण-संरक्षण की भावना अत्यन्त व्यापक, वैज्ञानिक एवं मानवीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत हुई है। वैदिक ऋषियों ने प्रकृति को केवल मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला साधन न मानकर उसे जीवन का अभिन्न एवं पवित्र अंग स्वीकार किया है। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, वनस्पति, नदियाँ, पर्वत तथा समस्त जीव-जगत के प्रति आदर एवं संरक्षण का भाव वैदिक चिंतन की प्रमुख विशेषता है। इस दृष्टि से वेदों में निहित

पर्यावरणीय चेतना वर्तमान समय की पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

वर्तमान युग में औद्योगीकरण, नगरीकरण, जनसंख्या-वृद्धि, वनों की निरन्तर कटाई, जल-स्रोतों का प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, मृदा-क्षरण तथा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के कारण पर्यावरण का संतुलन गंभीर रूप से प्रभावित हो रहा है। मनुष्य ने आधुनिक विकास के क्रम में प्रकृति पर अपने अधिकार को तो बढ़ाया, परन्तु उसके प्रति अपने उत्तरदायित्व को धीरे-धीरे विस्मृत कर दिया। परिणामस्वरूप आज जलवायु परिवर्तन, जल-संकट, वायु-प्रदूषण, जैव-विविधता में कमी तथा प्राकृतिक आपदाओं जैसी अनेक समस्याएँ हमारे सामने उपस्थित हैं। ऐसी परिस्थिति में वैदिक पर्यावरण-दृष्टि हमें प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व, संतुलन एवं संयम का मार्ग दिखाती है।

वेदों में पृथ्वी को माता तथा मनुष्य को उसका पुत्र मानने की भावना मानव और प्रकृति के बीच आत्मीय संबंध स्थापित करती है। इसी प्रकार जल को जीवन का आधार, वायु को प्राणदायिनी शक्ति तथा वनस्पतियों को मानव एवं समस्त जीवों के पोषण का आधार माना गया है। इससे यह संदेश प्राप्त होता है कि प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से किया जाना चाहिए, उनका अनियंत्रित दोहन नहीं। वैदिक चिंतन में यज्ञ, दान, संयम, शुचिता तथा प्रकृति के विभिन्न तत्वों के प्रति कृतज्ञता जैसे संस्कार भी पर्यावरणीय संतुलन की भावना को मजबूत करते हैं।

वैदिक संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उसमें मानव-कल्याण को प्रकृति-कल्याण से अलग नहीं माना गया। मनुष्य स्वस्थ एवं सुखी तभी रह सकता है, जब उसके चारों ओर का प्राकृतिक वातावरण स्वस्थ एवं संतुलित हो। इसलिए पर्यावरण की रक्षा केवल वर्तमान पीढ़ी का दायित्व नहीं, बल्कि भावी पीढ़ियों के प्रति भी हमारा नैतिक उत्तरदायित्व है। इस दृष्टि से वैदिक विचार आधुनिक सतत विकास (Sustainable Development) की अवधारणा से भी सामंजस्य स्थापित करते दिखाई देते हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम वैदिक पर्यावरणीय मूल्यों को केवल धार्मिक अथवा प्राचीन विचार मानकर सीमित न रखें, बल्कि उन्हें आधुनिक जीवन-पद्धति में व्यावहारिक रूप से अपनाएँ। जल का संरक्षण, वृक्षारोपण एवं वन-संरक्षण, नदियों एवं जलाशयों की स्वच्छता, वायु-प्रदूषण पर नियंत्रण, प्राकृतिक संसाधनों का सीमित एवं विवेकपूर्ण उपयोग तथा जैव-विविधता का संरक्षण जैसे प्रयासों को

सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। विद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से वैदिक पर्यावरणीय चेतना को आधुनिक पर्यावरण शिक्षा से जोड़ा जा सकता है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वैदिक पर्यावरण-दृष्टि केवल अतीत की सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान पर्यावरणीय संकट के समाधान के लिए प्रेरणादायी जीवन-दर्शन है। आधुनिक विज्ञान हमें पर्यावरणीय समस्याओं के कारणों एवं उनके तकनीकी समाधान प्रदान करता है, जबकि वैदिक चिंतन प्रकृति के प्रति हमारी मानसिकता एवं नैतिक दृष्टिकोण को परिवर्तित करने की प्रेरणा देता है। यदि आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान के साथ वैदिक संयम, सह-अस्तित्व, संरक्षण, कृतज्ञता एवं सर्वकल्याण की भावना को अपनाया जाए, तो पर्यावरण-संतुलन की दिशा में प्रभावी कदम उठाए जा सकते हैं। वास्तव में, प्रकृति की रक्षा करना स्वयं मानव जीवन की रक्षा करना है। इसलिए आज के समय में वेदों की पर्यावरणीय चेतना को पुनः समझना, उसका वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक पुनर्पाठ करना तथा उसे जन-जीवन में स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1.पर्यावरण भारत की भूमिका, प्राक्कथन पृष्ठ नंबर 4, कमलनाथ (पर्यावरण एवं वन मंत्रालय भारत सरकार ,1995)

2. संस्कृति एवं पर्यावरण पृष्ठ नंबर 152, हरिश्चंद्र व्यास, 1993

3. अथर्ववेद (12 काण्ड,1 सूक्त, 12 मंत्र)

4. अथर्ववेद (12 काण्ड, 1 सूक्त, 26 मंत्र)

5. शुक्ल यजुर्वेद (13 अध्याय, 18 मन्त्र)

6. अथर्ववेद (12 काण्ड,1 सूक्त, 11 मंत्र)

7. अथर्ववेद (3काण्ड,12 सूक्त, 9 मंत्र)

8. ऋग्वेद (1 मण्डल,23 सूक्त, 19 मंत्र)

9. ऋग्वेद (1 मण्डल,23 सूक्त, 20 मंत्र)

10. यजुर्वेद (4 अध्याय,7 मंत्र)

11. यजुर्वेद (4 अध्याय,7 मंत्र)

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049 4176

12. ऋग्वेद (8 मण्डल,18 सूक्त, 9 मंत्र)

13. यजुर्वेद (19 अध्याय ,38 मंत्र)

14. ऋग्वेद (6 मण्डल, 16 सूक्त 28 मंत्र)

15. ऋग्वेद (10 मण्डल, 28 सूक्त, 2 मंत्र)

16. ऋग्वेद (10 मण्डल, 186 सूक्त ,1 मंत्र)

17. ऋग्वेद (10 मण्डल, 186 सूक्त ,2 मंत्र)

18. ऋग्वेद (1 मण्डल, 89 सूक्त ,8 मंत्र)

19.अथर्ववेद (19 काण्ड, 9 सूक्त,3 मंत्र)

20.अथर्ववेद (19 काण्ड, 9 सूक्त,25 मंत्र)